

अंगिका लोकगाथा के संक्षिप्त परिचय

प्राप्ति: 28.07.2026
स्वीकृत: 10.09.2026

68

डॉ० शोभा कुमारी
सहायक प्राध्यापक
विश्वविद्यालय अंगिका विभाग
तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
ईमेल: shashi.ryans@gmail.com

सारांश

लोकगाथा प्रबंध काव्य के ही संक्षिप्त रूप छिकैं ऐकरा महाकाव्य भी कहै पारै छियैं। जेकरा हमरा सिनी महाकाव्य भी बोले छियैं। गाथा के आत्य में 'मनौनी' या बन्दौनी सिनी होय छै यानी मंगलचरण होय जाय छै। लोकगाथा में भी महाकाव्य रे प्रमुख कथा के साथे अवांतर कथा चलै छै। कथानक लंबा होय छै। कथा के अनुसार एक विशेष रस के साथ-साथ प्रासंगिक अन्य रस सिनी के वर्णन चित्रण मिलै छै। यही कारणे ऐकरा गाबै में गबैया के कथ्येक रात लागी जाय छै। कुच्छू लोकगाथा गाबै मे महीनों लागी जाय छै। लोकगाथा कंठ मे ही उत्पन्न होय छै आरो कंठ मे ऐकरो वास रहै छै। ई कंठ-परंपरा से पीढ़ी – दर – पीढ़ी चल्लों आबी रहलें छै। लोकगाथा में सब्ये तरहों के रस के समावेश होय छै। यें मे सांस्कृतिक सोहोपन होय छै। लोकगाथा सामाजिक अंधविश्वास से भी भरलें रहें छै। अंगप्रदेश मे कई टा लोकगाथा प्रचलित छै। 'नटुआ दयाल', सलेस भगत सिनी ऐकरो अन्यतम उदाहरण छिकैं। कुच्छू लोकगाथा वीररस से परपूर्ण रहें छै। वै मे नायक के वीरतापूर्ण काम के वर्णन रहे छै। 'आल्हा-ऊदल' 'दीना-भण्डारी, हिरनी-बिरनी, लोरिकैन, बिहुला बिशहरी सिनी यें मे प्रमुख छै। लोकगाथा मे जे खिस्सा रहै छै, वै मे जनमानस के हृदय के महान भाव के स्पष्ट छाप रहै छै। ये अंगमहाजनपद के अलावे आरो सिनी अन्य जनपद मे भी गौलो जाय छै, जेकरो भाषा वही जनपदों के भाषा होय छै।

कुल मिलाय के कहलें जाय परि छै कि लोकगाथा, लोककाव्य छिकैं। ऐकरा लोगो गाबी के सुनी के आरो सुनाय के सब सिनी आख्यान के कंठ में सुरक्षित राखलकैं। कहलें जाबे पारै छै कि लोकगाथा उत्पत्ति के जग्घें कंठे छिकैं। ऐकरो उत्पत्ति आसे विकास यें लोकजीवन मे पारंपरिक आएँ मौखिक यानी काव्य रूप में युगो-युगो से आबी रहलें छैं। ऐकरो धारा अवरल छै। ई अनन्त युगो तौय चलते रहतै।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

प्रस्तावना

मानव समुदाय में कोय परोपकारी सजा या लोकनायक के बढ़िया काम यानी लोकोपकारी कार्य के प्रशंसा में जे गति जाय छेलै ओकरा गाथा कहलौ जाय छै। लोकगाथा के परम्परा ते लागै छै बहुत पैम्हो सँ चल्लौ आबी रहलौ छै। भारत देश के लौकिक जीवन सदाय से ही संगतिमय रहलौ छै। जबे मानव के अपनो विचार व्यक्त करै लेली भाषा रूपि संपत्ति के खाजाना मिल्लै, तबे वे अंतर्मन में उमड़ै – घुमड़ैवाला भाव के व्यक्त करे लागलै। ओकरों रहन-सहन प्राकृतिक होय के चलते ही ओकरो ध्वनि प्रकृति के गीतितत्व से मिली के संगीतमय भेलो होतै। मानव ने बादल के गड़गड़ैबो सुनी के वैहने आवाज निकालनाय शुरू के देने होतें। हुषे पारे चिड़ैया के चहचहैबो झिंगुर के झनझनैबो सिनी सुनी के ओकरों मुँहों से सनझनाबैं के स्वर स्फूरित में रोको हुवे। मानव ते कौतहलवश ही बहुते क्रिया कलाप सीखी लै छै। अनुकरण करै के क्षमता तें मानव जाति मे सृष्टि के आरंभ से छै। उत्तरोत्तर यै क्षमता में वृद्धि भेलों गेलै। ये अनुकरण के बलो पे ही मानव ने आपनों विवेक से संसार के सबे प्राणी से आपनो स्तर के उच्चो करलकै। ‘अगंद’ प्रबंध काव्य में वर्णन छै—

“बोली बिन बाहर आबैंलै, सब उमसे—गुमसैं रहै विवश, शब्दों के ता—ता—थैथा संग, मन के मयूर नाची उल्लै। कत्ते दिन को मन मे धरलो सब गीत कथा बाँची उल्लै।

तबे शब्द ब्रह्म के पूजा में भाषा के यारी सघी गलै।

भावो के सुन्छर दीय में, प्रेमों के बाती जरी गेलैं।”¹

अनुमानत : सृष्टि के आरंभिक काल वैदिक काल, पौराणिक काल, ऐतिहासिक आये भौगोलिक स्थिति के अनुसार गाथा के भी परंपरा शुरू मेलो होते आरंभ में मानव—जाति के मनोरंजन वास्ते कोय साधन नै छेलै, ये लैके वे आपनों अंदर के भाव के गति मे गूँथी के आनंद उठाबै के प्रयास करते होतै। वहीं से गाथा के परंपरा शुरू भेलो होतै।

प्रकृति के किया कलाप बड़ा रहस्यमय छै। यै किया—कलाप से मानव के भाव जागृत होतें रहलै, जै से मानव समुदाय ने सूर्य, चन्द्रमा, धरती पेड़, पौधा, नदी, पहाड़सिनी जे कि कोनो—न—कोनो रूप में मानव के उपकारी हेलैं, ओकरा आपनो रक्षक लेलकै। आरो वै सिनी के आराधना करनाथ शुरू के देलकै। ओकरो प्रशंसा करे लागलै। मानव जबे विशेष खुश होय है या विशेष दुःखी होय छै, ते ओकरा मुँहों से गान निकलै छै। मैथिलीशरण गुप्त नें भी ‘यशोधरा’ में लिखने छै—

“रूदन का हँसना ही तो गान, गा—गाकर रोती है मेरी हृदतंत्री की तान। वियोगी होगा पलला कवि, आह से उपजा होगा गान। वही होगी कविता अनजान।”²

कोय्यो लोकगाथा में जै तत्वके प्रहानता रहे छै, वही कोटि में ओकर वर्गीकृत करलौ जाय छै। विषय। वस्तु के आधार पे कथ्येकटा विज्ञानें लोकगाथा के कोटिकरण करने छै।

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय — हिनी विषय। वस्तु के आधार पे लोकगाथा तीन कोटि के मानै छै—

1. प्रेमकथात्मक लोकगाथा
2. वीरकथात्मक लोकगाथा
3. रोमांचकनात्मक लोकगाथा।”³

1. प्रेमकथात्मक लोकगाथा

भारतीय लोकगाथा सिनी में खास करी कें प्रेम के यथार्थ झलक रहै छै झलके छे। बिहुला – विषहरी, राजा-भरथरी, गाथासिनी में प्रेम के संगे-संगे वियोग भी चरम सीमा पे छै। राजस्थानी लोकगाथा 'ढोला मारु, पंजाबी गाया 'हीरा-राँझा, सोहिनी महीवाल' सिनी यही तरहो के गाथा छिकै। यै सिनी गाथा में उपस्थित प्रेम तत्व श्रोता के रसमग्न करी दै छै।

उपर्युक्त दूनो में वीरकथा, आरो रोमांचकात्मक बिन्दु पे प्रभाव होय छै। लोकगाथा के तत्प के आधार पें। डॉ० शंकर दयाल यादव ने लोकगाथा के वर्गीकरण लोकतत्व के आधार पें करने छै। हिन्दी लोकगाथा के लोक महाकाव्य के चार टा विशेषता छै—

1. सक्रियता
2. चारित्रिकता
3. पृष्ठभूमि
4. कथा

काल/समय के आधार पे

लोकगाथा के प्रसिद्ध विहान डॉ० श्रीराम शर्मा नें लोकगाथा के वर्गीकरण रचनकाल के आधार पें करने छै/हुनी छह तरहो के लोकगाथा मौनलै छै।

1. प्राचीनतम गाथासिनी
2. अलौकिक गाथासिनी
3. पौराणिक गाथासिनी
4. कौटुम्बिक गाथासिनी
5. सीमान्त गाथासिनी
6. आरण्यक गाथासिनी⁵

कोय्यो गाथा के लोकनायक में संबंधित क्षेत्र के सबरा प्रकृति झलकै छै। वै क्षेत्र के रहन-सहन, आचार-विचार-व्यवहार रीति-रिवाज आरन्ही के स्पष्ट छाप वै नायक पें रहै छै। लोकगाथा में संबंधित पात्र के कथोपकथन स्थानीयता के खुशबू से मह-मह करते रहै छै।

ई मुख्यतः पाँच रूपो में देखलो जाय छै —

1. भाषागत
2. भूगोलगत
3. संस्कृति
4. उद्योग
5. शासकीय व्यवस्थागत

निष्कर्ष

हमरा लगै छै लोकगाथा प्राय ऐहनो होय है जै में कोय तरह के उपदेश नै देलौ जाय छै। यें में नायक के चरित्र के ही एना देखलै जाय छै कि लोग ओकरा से प्रेरणा लिये पारे। कुछ गाथा-साहित्य

में लोकजीवन के आनंद लेली ओकरा में बढ़िया काम करै लेली, निष्ठा उत्पन्न करै लेली गाथानायक के गुणगान के संगे-संगे उपदेशों दै छै। रामचरितमानस में भी ऐहनों उपदेश देकों गेलों छै।

“बातुल भूत विबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन बिचोरा।

जिन्ह कृत महा मोह मद पाना। तिन्हकर कहा करिअ नहिं काना।”⁶

अर्थात् जेकरा वायु के रोग हुवे जे भूत के बश में हुवे जे नशा मे चूर हुवे, ओकरा कहला पें ध्यान नै दियो।

“कर्मप्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फल चाखा।”⁷

कोथ भी लोकगाथा के रचबैया तत्कालीन समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति ही होय छै। जें समाज के बेसी अनुभव करै छै, वहीं ओकरा बारे में सोचे पारे। ओकरो सोचै-विचारै के शक्ति से ही गाथा के निर्माण हुवे पारै। कुल मिलाय केई कहलों जाबें पारै छै कि लोकगाथा के सुनबैया जाँ मूर्खों रहतै तें ओकरों बुद्धि के विकास जरूर होते। यै लेली लोगों के बौद्धिक विकास में लोकगाथा सहायक सिद्ध होय छै। तें हम्मे ई कहै पारै छी कि बौद्धिक विकास के दृष्टिकोण से भी लोकगाथा महत्वपूर्ण छै।

संदर्भ

1. मिश्र आमोद कुमार , अंगिका नाटय साहित्य उद्भव आए विकास, अंगिका प्रबंधकाव्य-उद्धरण निर्दिष्ट जनवरी 2009, पृ0सं0-3
2. गुप्त मौथिलीशरण यशोधरा, पृ0सं0-17
3. उपाध्याय डॉ० कृष्णदेव-लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग पृ0सं0-103
4. यादव डॉ० राम-लोकसाहित्य: सिद्धांत और प्रयोग वर्ष 1981, पृ0सं0-99
5. शर्मा श्रीराम-लोक साहित्य: सिद्धांत, वर्ष 1980, पृ0सं0-109
6. तुलसीदाय-रामचरितमानस, बालकाण्ड, चौपाई सं० 195
7. तुलसीदास-रामचरितमानस, बालकाण्ड चौपाई 197